मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- अवैध निर्माणों की रिश्वत के भाव बढ़े : चोर-उचक्के चौधरी, लुडीरन प्रधान वाली कहावत चरितार्थ 3
- क्या डूबने वाला है आईसीआईसीआई बैंक
- निजी क्षेत्र के बैंको की बेशर्मी देखिए 4
- मोदी जी! बंद कीजिए ये दिखावा, डार्विन और न्यूटन पर शिक्षामंत्री की गलतबयानी पर चुप्पी 5
- मेडिकल कमिश्नर कटारिया है अड़ंगा मास्टर 8

वर्ष 31 अंक -15 फ़रीदाबाद 8-14 अप्रैल 2018 फ़ोन : - 9999595632 ₹ 2

भाजपा और उसके दो मंत्रियों द्वारा अनिल जिंदल को दिया जा रहा संरक्षण बेनकाब

एसआरएस ग्रुप के चेयरमैन की गिरफ्तारी के पीछे क्या खेल हुआ

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: पूर्व हरियाणा में रियल्टी सेक्टर की बड़ी कंपनी एसआरएस ग्रुप के चेयरमैन अनिल जिंदल और उनकी कंपनी के अन्य डायरेक्टरों को आखिरकार फरीदाबाद पुलिस को गिरफ्तार करना ही पड़ा। जनता, प्राइवेट इनवेस्टर्स और एकाध बैंक पिछले छह महीने से अनिल जिंदल और उसके गुर्गों पर पुलिस एक्शन की मांग कर रहे थे लेकिन पुलिस इस शख्स को बचा रही थी। हाल ही में जब मजदूर मोर्चा ने पूरे तथ्यों के साथ एसआरएस ग्रुप द्वारा की गई लूटपाट की खबर छापी तो हरियाणा सरकार को एक्शन के लिए बाध्य होना पड़ा। इस सारे प्रकरण में भाजपा और उसके दो मंत्रियों द्वारा इस शख्स को दिया जा रहा संरक्षण बेनकाब हो गया।

कौन बचा रहा था जिंदल को

पुलिस का कहना है कि उसे मुखबिरों के जरिए सूचना मिली और उसने दिल्ली में महिपालपुर के होटलों में ठहरे अनिल जिंदल, बिशन बंसल, नानकचंद तायल व देवेंद्र अधाना और विनोद गर्ग उर्फ मामाजी को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन यह एक प्रायोजित गिरफ्तारी थी। आला पुलिस अफसर जानते थे कि बैंकों और प्राइवेट इन्वेस्टरों को लूटने वाला यह गैंग कहां छिपा हुआ है लेकिन पुलिस को मिलने वाली मोटी मंथली और भाजपा नेताओं से मिल रहा संरक्षण पुलिस अफसरों को एक्शन से रोक रहा था।

पुलिस के पास एसआरएस के खिलाफ सौ से ज्यादा शिकायतें थीं और दो दर्जन से ज्यादा एफआईआर थी लेकिन इसके बावजूद एक्शन जीरो था। मजदूर मोर्चा के पिछले अंकों में हमने लगातार बताया है कि एसआरएस ग्रुप के चेयरमैन अनिल जिंदल से केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर और हरियाणा सरकार के मंत्री विपुल गोयल के मधुर संबंध रहे हैं। जिंदल के तमाम सार्वजनिक कार्यक्रमों में दोनों मंत्री खुलेआम शामिल होते रहे हैं। पूंजीपति और दलाल मीडिया उनके फोटो और समाचार छापता रहा। बैंकों से कर्ज लेकर और प्राइवेट इन्वेस्टरों का पैसा हड़प कर अमीर बने अनिल जिंदल की कामयाबी की कहानियां जनता को दलाल मीडिया बताता रहता था। दलाल मीडिया ने यह तक तर्क दिए कि अगर अनिल जिंदल की गिरफ्तारी हो गई तो प्राइवेट इन्वेस्टरों के करोड़ों रुपये डूब जाएंगे क्योंकि गिरफ्तारी होने के बाद उन पैसों की वसूली लोग किनसे करेंगे। यह तर्क भी दलाल मीडिया तक उन्हीं मंत्रियों द्वारा पहुंचाए गए जो इस शख्स को संरक्षण दे रहे थे।

एसआरएस पीड़ित मंच ने इस मामले में बहुत सूझबूझ से काम लिया। उन्होंने मजदूर मोर्चा में एसआरएस ग्रुप के बारे में छपी तथ्यपूर्ण खबरों के साथ हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अशोक तंवर से संपर्क साधा। मुद्दे की तलाश में भटक रहे अशोक तंवर ने इसे फौरन लपक लिया। उन्होंने अखबार में छपी खबर का हवाला देकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की और सरकार पर दबाव बनाया कि अगर अनिल जिंदल को गिरफ्तार नहीं किया गया तो कांग्रेस पार्टी मामला विधानसभा और लोकसभा में उठाएगी।

एक के बाद एक बैंक घोटाले सामने आ रहे हैं और इसमें भाजपा नेताओं व मंत्रियों की संलिप्तता जिस तरह सामने आ रही है, उसने मनोहर लाल खट्टर सरकार को एक्शन पर मजबूर किया। मुख्यमंत्री ने फरीदाबाद के आला पुलिस अफसरों से अनिल जिंदल एंड कंपनी की गिरफ्तारी के लिए निर्देश जारी किया। इसके बाद फरीदाबाद पुलिस के पास इनकी गिरफ्तारी न करने का कोई बहाना नहीं था। खट्टर की सीएम विंडो पर पिछले एक साल से एसआरएस ग्रुप के खिलाफ शिकायतों के अंबार लगे हुए थे, अगर खट्टर को कोई एक्शन लेना था तो वह छह महीना पहले ही उन्हीं शिकायतों के आधार पर एक्शन ले सकते थे। लेकिन कांग्रेस की राजनीतिक धमकी के बाद खट्टर सरकार गंभीर हुई।

कितने का घोटाला किया है एसआरएस ग्रुप ने

इसका कोई ठोस आंकड़ा किसी के पास नहीं है। लेकिन मजदूर मोर्चा के पास उपलब्ध जानकारी के मुताबिक एसआरएस ग्रुप ने 200 से ज्यादा शेल (फर्जी) कंपनियां खड़ी कीं और इन्हीं की आड़ में सरकारी और गैर सरकारी बैंकों से करीब 7000 करोड़ के कर्ज लिए गए। फिर इन पैसों को अन्य जगहों पर लगाया गया या उड़ाया गया। इसी तरह प्राइवेट इन्वेस्टरों को मोटा रिटर्न देने के नाम पर उनसे भी करीब 2000 करोड़ रुपये लिए गए। फ्लैट्स के प्रोजेक्ट्स की प्री लॉन्चिंग के नाम पर जनता से करीब 1000 करोड़ रुपये की ठगी की गई। हालांकि हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष अशोक तंवर ने इसे 30 हजार करोड़ रुपये का घोटाला बताया है।

बहरहाल, प्राइवेट इन्वेस्टरों और जनता के साथ हुई ठगी के रेकॉर्ड मिलना जांच एजेंसियों के लिए मुश्किल होगा लेकिन बैंकों के लोन हड़पने के सबूत उपलब्ध हैं। ज्यादातर बैंक लोन डिफाल्टर मामले में ही इस शख्स को मुकदमों का सामना करना पड़ेगा। ताज्जुब की बात है कि केनरा और आंध्र बैंक के अलावा अभी तक किसी बैंक ने एसआरएस ग्रुप के खिलाफ लोन डिफाल्टर की कानूनी कार्यवाई तक शुरू नहीं की जबकि एक साल से सभी बैंकों की किस्तें रुकी हुई थीं लेकिन बैंकों में बड़े स्तर पर जिंदल की सेटिंग के कारण बैंक भी चुप बैठे थे।

इनेवस्टरों की आपबीती

कुछ इन्वेस्टरों ने बताया कि जब-जब वो लोग अमित जिंदल के पास अपने पैसे मांगने पहुंचे तो वहां फरीदाबाद के एक पूर्व मंत्री का बेटा और कुछ पहलवान बैठे होते थे। वो लोग पैसे मांगने वालों से कहते थे कि जिंदल भाई साहब का उनके रहते हुए कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। यह अपने आप में इशारा था कि जिंदल से कोई पैसे मांगेगा तो वह उसकी पिटाई करने के लिए बैठे हैं। बता दें कि यह पूर्व मंत्री कभी सैनिक कॉलोनी के प्रोजेक्ट से जुड़ा रहा है और अब उसका लड़का भी प्रॉपर्टी बिजनेस में है। लेकिन यह संरक्षण सिर्फ यहीं तक नहीं था।

एक मौजूदा मंत्री और उसका बेटा भी एसआरएस, पीयूष ग्रुप व अन्य के मददगार बने हुए हैं। यह लोग प्रशासनिक अफसरों तक पैसे पहुंचवाने का काम करते हैं। यानी प्रॉपर्टी मार्केट लुटेरे नेताओं के जरिए प्रशासन के कृपापात्र बने हुए हैं। यह भाजपाई नेता भी प्रॉपर्टी के धंधे में है। फरीदाबाद में दो मजाक आम हो गए हैं कि किसी भी बड़ी बिल्डिंग पर हाथ रख दो, तुरंत पता चल जाता है कि मंत्री जी का इसमें हिस्सा या फिर उनका आशीर्वाद मिला हुआ है। दूसरा मजाक यह है कि प्रॉपर्टी मार्केट में दो नंबर धंधे में शहर के ज्यादातर वैश्य समुदाय के लोग हैं जो धोखाधड़ी कर रहे हैं लेकिन उन्हें बचाने वाले गुर्जर और जाट नेता बाकायदा संरक्षण दे रहे हैं।

फरीदाबाद-पलवल जिले के बाकी भाजपा विधायकों की हालत यह हो गई है कि बेचारे आम जनता की तरह मंत्री और उसके बेटे के पास फरियाद लेकर गिड़गिड़ाने जाते हैं लेकिन उन्हें कोई मदद नहीं मिलती। इनमें से कुछ ने मुख्यमंत्री व भाजपा आला कमान तक शिकायतें पहुंचाई लेकिन हासिल कुछ नहीं हुआ।

रावल ग्रुप के नाम से शिक्षण संस्थान चलाने वाले एक पार्टनर का पैसा भी एसआरएस के पास फंसा हुआ है। वह जब अपना पैसा मांगने पहुंचे तो मंत्री और उनके गुर्गों ने धमका दिया। फरीदाबाद में इतनी अंधेरगर्दी कभी नहीं चली थी जितनी मंत्री और उसके गुर्गों ने पूरे शहर में की हुई है।

शेष पेज तीन पर

रिश्वत लेते पकड़ी गई एसडीएम चंडीगढ़, जमानत पर आकर लगी एसडीएम उचाना

जींद (म.मो.) डॉक्टर शिल्पी पात्र नाम की एक महिला एचसीएस अधिकारी चंडीगढ में एसडीएम के पद पर तैनात थी। इस तैनाती के दौरान उसने एक दुकान की एलाटमेंट में एक व्यक्ति से ढाई लाख रिश्वत की मांग अपने पति व एक बिचौलिये के माध्यम से की थी। जानकारों के मुताबिक सौदा एक लाख में पट भी गया था। दुकानदार ने रिश्वत की पूरी रकम अदा भी कर दी थी। लेकिन एसडीएम शिल्पी के मन में लालच आ गया। उसने सौदे से मुकरते हुए एक लाख की मांग और कर डाली।

परेशान दुकानदार ने सारी बात स्थानीय सीबीआई अधिकारियों को बताई। छापेमारी की योजना विधिवत बनाकर दुकानदार को 50,000/-देकर शिल्पी के पास भेजा गया। रुपये लेते ही, पहले से तैयार सीबीआई टीम ने एसडीएम साहिबा को दबोच लिया। जांच पड़ताल में उनके पति व बिचौलियों का पता लगने पर उन्हें भी गिरफ़्तार कर जेल भेज दिया गया। करीब ढाई माह जेल में रहने व करीब 7-8 माह निलम्बित रहने के पश्चात् खट्टर सरकार ने उन्हें न केवल बहाल कर दिया बल्कि उचाना के एसडीएम पद पर तैनात भी कर दिया।

खट्टर सरकार द्वारा भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन देने का नारा कितना खोखला है, उसे समझने का यह एक बहुत बढिया उदाहरण है।

उन्हें शायद शिल्पी पात्र से अधिक ईमानदार एवं स्वच्छ छवि का कोई एचसीएस अधिकारी नहीं मिला। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि खट्टर को अन्य सभी अधिकारी शिल्पी से भी अधिक भ्रष्ट नज़र आते हैं। यदि ऐसा ही है तो फ़िर राज्य को भ्रष्टाचार मुक्त की बजाय भ्रष्टाचारयुक्त कहना ज़्यादा प्रासांगिक होगा।

जानकार सूत्रों का मानना है कि इस तैनाती के पीछे केन्द्रीय मंत्री बिरेन्द्र सिंह का हाथ है क्योंकि उचाना उनका चुनाव क्षेत्र है। गत सप्ताह बिरेन्दर सिंह ने अपने जन्मदिन के अवसर पर हवन आदि का एक बड़ा पाखंड रचा था। इसमें मुख्यमंत्री खट्टर भी शामिल हुए थे। इस अवसर पर बिरेन्द्र सिंह ने मुख्यमंत्री के सामने कुछ मांगे तो सार्वजनिक रूप से रखी थी कुछ मांगे अलग से पर्दे में रखी होंगी। उन्हीं पर्दे वाली मांगों में से एक मांग शिल्पी की तैनाती की भी रही होगी।

बेशर्मी का आलम

हाईवे पर मौतों के बाद मंत्री को पैदल पुल की याद आई

फरीदाबाद (म.मो.) दिनांक 5 अप्रैल को स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर ने राजमार्ग पर बनने वाले सात पैदल पुलों का शिलान्यास कर दिया।

विदित है कि शहर के बीच से गुजरते राजमार्ग को छह लेन का करने व उपरगामी पुल बनाने से वाहनों की गति काफी बढ़ गई। ऐसे में इतनी चौड़ी सड़क को पैदल पार करने की कोई व्यवस्था न करने से गत एक वर्ष में सैकड़ों लोग सड़क दुर्घटना में अपनी जान गंवा बैठे हैं।

एक नौ वर्षीय बालक तो ठीक उसी दिन एक बस की चपेट में आकर मारा गया जिस दिन मंत्री जी पुलों के शिलान्यास की ड्रामेबाजी कर रहे थे। बालक बल्लभगढ़ अनाज मंडी के सामने से सड़क पार कर रहा था कि यूपी रोडवेज की बस के नीचे आकर मारा गया। जनता द्वारा पीटे जाने के डर से ड्राइवर बस छोड़कर भाग गया। पुलिस ने भी बस ड्राइवर के विरूद्ध ही मुकदमा दर्ज करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली।

वास्तव में इस तरह की दुर्घटनाओं के लिए ड्राइवर नहीं बल्कि सरकार दोषी होती है। जिस केन्द्रीय मंत्री नीतिन गडकरी ने यह राजमार्ग अनिल अम्बानी के हाथों बेच रखा है, असली दोषी तो वही है जो जनता को नजर नहीं आता। सड़क पर भीड़ द्वारा पिटाई का डर यदि ड्राइवर की बजाय शिलान्यास करने तथा नारियल फोड़ने वाले मंत्रियों को जिस दिन होने लगेगा ये दुर्घटनायें स्वत: बंद हो जायेंगी।

विदित है कि गत छह-सात वर्षो से इस राजमार्ग निर्माण के नाम पर अनिल अम्बानी करोड़ों रुपया रोजाना बतौर टोल टैक्स जनता से लूट रहा है। मंत्री कष्णपाल गूजर गत दो-तीन बरसों स इसी राजमार्ग पर नारियल फोड़ने में व्यस्त हैं। क्या उन्हें पैदल सड़कर पार करने वाले नजर नहीं आते? क्या उन्हें राजमार्ग के अपरगामी पुलों पर छाया अंधेरा नजर नही आता?

अभी भी केवल सात पैदल पुलों का शिलान्यास किया है मंत्री जी ने जबकि सैक्टर 28 से लेकर सीकरी गांव तक कम से कम बीस ऐसे पुलों की जरूरत है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ये सात पुल भी स्वचालित एक्सकेलेटर वाले न होकर साधारण सीढ़ियों वाले ही होंगे। जाहिर है इससे वृद्धों व दिव्यांगों को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

नारी के सम्मान में बीजेपी बिहार प्रदेश अध्यक्ष नित्यानंद राय मैदान में.....

अध्यक्ष जी कहते हैं अपनी फोटो भेजो..
महिला बोलती हैं मैं शादी शुदा हूँ...
अध्यक्ष जी कहते हैं तो क्या हुआ....
अपनी Hot Picture भेजिये.....
महिला : क्या काम है मेरे फोटो से ?
अध्यक्ष जी : देखने का बहुत मन कर रहा है...
महिला बोलती हैं ऐसा भी क्या है हममें सर.. ??
अध्यक्ष जी कहते हैं आप में जो हैं वह किसी में नहीं...
अब तक की बातचीत में अध्यक्ष जी बहुत गरम हो गये, जोश में अपने गुप्तांग की फोटो महिला को भेज दी...और कहने लगे हमें ऐसी ही फोटो आपकी चाहिए.....
महिला बोलती हैं, आप पागल तो नहीं हो ऐसा कोई फोटो भेजता है क्या.. ?
अध्यक्ष जी कहते हैं बोलो आपको पार्टी संगठन में क्या बनाना है... ?

(फेसबुक मेसेंजर)